Center for Civilisational Studies
सभ्यता अध्ययन केन्द्र

एवं

हंसराज महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय)

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी

वैद्य गुरुदत्त के साहित्य में राष्ट्रीय अस्मिता

एवं

लोकार्पण : अखिल भारतीय शोध आलेख प्रतियोगिता नियमावली

(विषय : वैद्य गुरुदत्त का रचना संसार)

सान्निध्य

श्री राम बहादुर राय

अध्यक्ष
आईजीएनसीए

मुख्य अतिथि

प्रो. निरंजन कुमार

अधिष्ठाता (योजना)
दिल्ली विश्वविद्यालय

सारस्वत अतिथि

प्रो. विमलेश कांति वर्मा

वरिष्ठ साहित्यकार

अध्यक्षता

प्रो. रमा

प्राचार्या
हंसराज महाविद्यालय

विशिष्ट अतिथि

श्री अनिल जोशी

पूर्व उपाध्यक्ष
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

मुख्य वक्ता

प्रो. हरीश अरोड़ा

प्रोफेसर
पीजीडीएवी (सांध्य) कॉलेज

प्रस्तावना

श्री रवि शंकर

संपादक
गगनांचल

गरिमामयी उपस्थिति

प्रो. पूरन चंद टंडन | **श्री पद्मेश दत्त** | **श्री राजीव रंजन प्रसाद**

28.08.2024 (बुधवार) अपराह्न: 2:30 बजे **संगोष्ठी कक्ष, हंसराज कॉलेज**

कार्यक्रम समन्वयक : अविरल अभिलाष (8004571127)

संपर्क : विजय कुमार मिश्र (8585956742) | धीप्रज्ञ द्विवेदी (7011120200) | दिनेश कौशिक (8393834016) | उमेश चौधरी (7053153592)

कार्यक्रम के पश्चात हमारे साथ जलपान अवश्य करें।

परिणाम प्रतिवेदन

वैद्य गुरुदत्त के साहित्य में राष्ट्रीय अस्मिता: संगोष्ठी

आयोजक

सभ्यता अध्ययन केंद्र

स्थान

हंसराज महाविद्यालय, संगोष्ठी कक्ष, नई दिल्ली

तिथि/समय

28 अगस्त, 2024/ अपराह्न: 2:30 बजे

क्रम सूची

1. परिचय	**04**
2. पुस्तक परिचय	**05**
3. अतिथियों के शब्दों में	**06**
4. सम्मान समारोह	**07-12**
5. आयोजक (CCS) एवं परिणाम	**13**
6. मीडिया कवरेज	**14-16**
7. धन्यवाद	**17**

परिचय

सभ्यता अध्ययन केंद्र एवं हंसराज महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय के सभागार में 28 अगस्त 2024 को दो महत्वपूर्ण आयोजन श्रृंखलाबद्ध थे। पहला था- वैद्य गुरु दत्त के साहित्य में राष्ट्रीय अस्मिता। इस आयोजन में "वैद्य गुरुदत्त का रचना संसार" विषय पर **अखिल भारतीय शोध आलेख प्रतियोगिता की नियमावली का लोकार्पण।** इंदिरागंधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष श्री राम बहादुर राय के सानिध्य में आयोजित इस आयोजन की अध्यक्षता हंसराज कॉलेज की प्राचार्या प्रोफ़ेसर रमा ने की। आमंत्रित मुख्य अतिथि थे प्रो. निरंजन कुमार, अधिष्ठाता (योजना) दिल्ली विश्वविद्यालय, सारस्वत अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. विमलेश कांति वर्मा, विशिष्ठ अतिथि थे श्री अनिल जोशी, पूर्व उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा, वैद्य गुरुदत्त के साहित्य में राष्ट्रीय अस्मिता विषय के मुख्य वक्ता पीजीडीएवी (सांध्य) कॉलेज दिल्ली के प्रो. हरीश अरोड़ा तथा सभ्यता अध्ययन केंद्र के निदेशक, गगनांचल पत्रिका के संपादक व गोष्ठी के बीज वक्ता रवि शंकर मंच पर उपस्थित थे।

वैद्य गुरुदत्त के बारे में

गुरु दत्त नाम से कई बार फिल्मकार नाम से भ्रम होता है लेकिन इस गोष्ठी के गुरुदत्त जिनका जन्म 1894 में हुआ वे राष्ट्रीय चेतना के बहुत बड़े उपन्यासकार हुए जिन्होंने 200 से अधिक पुस्तकें लिखी। इनमें उपन्यास, कहानियां और नाटक मुख्यत: शामिल हैं। लेखन के साथ साथ वे आयुर्वेद के चिकित्सक भी थे। वैद्य गुरुदत्त ने 198 उपन्यास लिखे। उन्हें अपने शास्त्रों का भरपूर ज्ञान था, उन्हे भारतीय संस्कृति का उत्तम ज्ञान था। विज्ञान, राजनीति और सामाजिक विषयों पर उन्होंने बहुत लिखा। आजादी की पूरी स्थिति को जानने के लिए विद्यार्थियों को गुरुदत्त जी को पढ़ना चाहिए। खासकर लहरों की टक्कर और ज़माना बदल गया दोनो उपन्यास पढ़ने योग्य हैं।

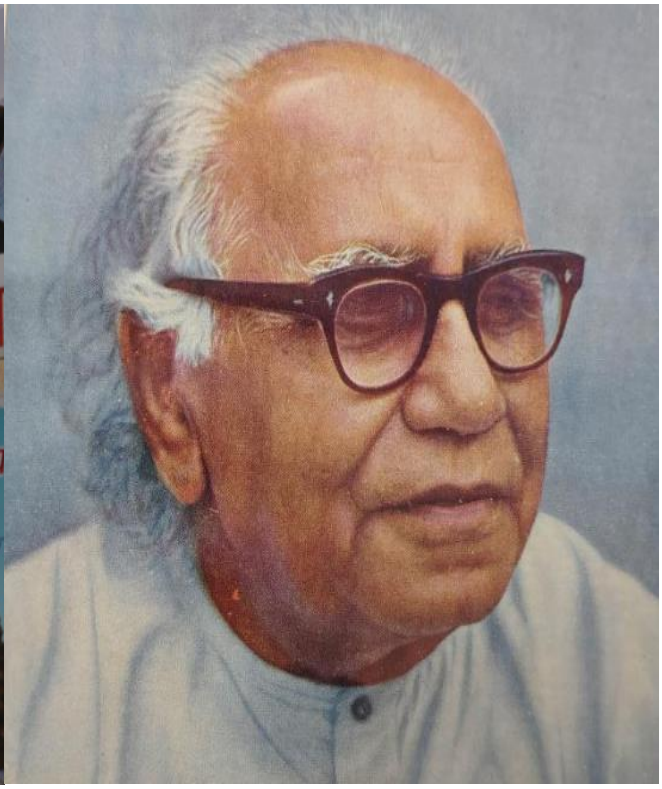

अतिथियों के शब्दों में..

विशिष्ठ अतिथि, पूर्व उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी संस्थान अनिल जोशी ने भारत विभाजन की त्रासदी का वर्णन करते हुए बताया कि वैद्य गुरु दत्त ने भारत विभाजन पर जितना लिखा उतना किसी ने नही लिखा। भारत विभाजन को समझने के लिए गुरु दत्त के उपन्यासों को पढ़ना आवश्यक है। भारत के विभाजन में 20 लाख लोगों की जानें गई। 1940 से 1947 के मध्य केवल भारत में 47 हजार से अधिक लोग मारे गए। एक लाख महिलाओं के साथ दुराचार हुआ। उन्होंने कहा कि इतिहास को आपको समझना होगा। आजादी के आंदोलन के दौरान विभाजन के लिए हुए मतदान में 96 प्रतिशत लोगों ने विभाजन के पक्ष में मतदान किया। ये मतदान उन्होंने ही किया था जो विभाजन चाहते थे।

मुख्य वक्ता प्रो. हरीश अरोड़ा ने गुरुदत्त को विशिष्ठ रचनाकार के रूप में प्रस्तुत किया। भारतीय स्वतंत्रता से पहले प्रकाशकों ने उन्हें गंभीर लेखक नही माना। वे ऐसे रचनाकार थे जिन्होंने दो महत्वपूर्ण काम किए। पहला उन्होंने स्वाधीनता के पथ पर उपन्यास लिखा। उनके जीवन का लक्ष्य स्वतंत्रता के प्रति चिंतन मनन करना। उनके उपन्यासों में कांग्रेस का जिक्र है कि किस तरह महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए किया जाय। किसीने प्रधानमंत्री बनने के लिए काम किया और भारत का विभाजन की हद तक जिद्द पकड़े रखी। वैद्य गुरुदत्त को राष्ट्रीय साहित्यकार के रूप में स्वीकृति देने के संदर्भ में उन्होंने बताया कि संभवत: उस समय के शासकों को पसंद न आई हो। भारत के पूरा दर्शन उनके लेखन का विषय रहा। कभी उनका उपन्यास "अवतरण", "संभावामि युगे युगे" पढ़िए। राष्ट्र के संबंध में गंभीरता से चिंतन करने वाले थे वैद्य गुरु दत्त।

मुख्य अतिथि प्रोफेसर निरंजन कुमार ने वैद्य गुरुदत्त के साहित्य में राष्ट्रीय अस्मिता विषय पर कुछ चिंतन बिंदु रखे। उन्होंने कहा राष्ट्र और नेशन बराबर भाव के नही हैं जैसे धर्म और मजहब या धर्मनिरपेक्षता और सेकुलरिज्म समानार्थी नही है। स्वतंत्रता, स्वाधीनता, स्वदेशी जैसे शब्द भी अपूर्ण अर्थ हैं। स्व का तंत्र हम पूर्णतः स्थापित नही कर पाए। जिस तंत्र को हम अपना कह देते हैं, क्या वह वास्तव में अपना तंत्र है। गांधी जी जो भारतीय जीवन का चिंतन करते थे वह पूरा भी हुआ। गांधी को मारनेवाले उनके ही राजनीतिक अनुयायी थे।

राष्ट्र बहुत प्राचीन वैदिक अवधारणा है। इसमें धरती के प्रति प्रेम, यहां के लोग और संस्कृति भारत का सांस्कृतिक स्वरूप को निर्धारित करते हैं। नेशन पश्चिम की राजनीतिक अवधारणा है। भारत के प्राचीन ऋषि मुनि जिन्होंने जीवन का लक्ष्य, मार्ग आदि का विवेचन उपनिषदों में किया है, यही भारत का संस्कृतिकवाद है। उन्होंने अनेक साहित्यकारों का उद्धरण प्रस्तुत किया।

सारस्वत अतिथि विमलेश कांति वर्मा ने शब्दों पर चर्चा करते हुए कहा दर्शन और फिलोसोफी एक नही हैं। जहां फिलोसोफ समाप्त होती है वहां दर्शन शुरू होता है। भारतीय चिंतन गुणवत्ता को महत्व देता है। गुरुदत्त ने जो लिखा वह महत्वपूर्ण है। साहित्य दर्पण में साहित्य के लिए लिखा शब्दार्थौ सहितम साहित्य:। गुलशन नंदा प्रेय मार्ग के लेखक हैं गुरुदत्त श्रेय मार्ग के लेखक हैं। लिटरेचर अंग्रेजी का शब्द है उसमें

साहित्य का भाव नही। मेडिकल लिटरेचर दवाइयों के रेपर पर भी लिखा होता है। शब्दों के महत्व को समझना आवश्यक है। गुरुदत्त के शब्दों का भी यही महत्व है। अच्छे लेखक को भले ही काम पढ़ते हों, लेकिन अच्छे लोग पढ़ते हैं। गुरु दत्त में यही बात थी कि उनके साहित्य में गहरी बात है। रामचरितमानस में रामराज का वर्णन में बताया जाता है

बयरू न कर काहू सन कोई... यह सुशासन की बहुत बड़ी परिभाषा है। गुरुदत्त का साहित्य पढ़ेंगे तो हमें भारत के बारे में बहुत कुछ जानकारी मिलेगी।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष राम बहादुर राय जिनका सानिध्य इस सभा को मिला उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा वैद्य गुरुदत्त अखिल भारतीय व्यक्ति थे। वैद्य गुरुदत्त केवल उपन्यासकार नही थे। मूलतः उनकी दृष्टि राजनीतिक थी। उन्होंने कहा रविशंकर जी जिस लक्ष्य के साथ हैं वह है गुरुदत्त का राष्ट्रीय दृष्टिकोण। "भारत गांधी, नेहरू की छाया में" का उन्होंने विशेष जिक्र किया। गांधी को छोटा नही बनाया जा सकता है। उसका कारण है गांधी की ग्राम स्वराज की परिकल्पना। उन्होंने कहा वैद्य गुरुदत्त को पढ़ें, विश्लेषण के साथ पढ़ें। गुरुदत्त के साहित्य में भारत विभाजन से जुड़े अनेक पक्ष हैं। उन्होंने यह भी कहा कि गुरुदत्त के साहित्य में जो काली छाया है, उससे बचें।

हंसराज कॉलेज की प्राचार्या डॉक्टर रमा ने अध्यक्षता करते हुए गुरुदत्त साहित्य को पढ़ने की प्रेरणा दी।

इस आयोजन के अंत में डॉ विजय मिश्रा ने सभी आमंत्रित अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

आयोजक

सेंटर फॉर सिविलाइजेशनल स्टडीज यानी सभ्यता अध्ययन केंद्र एक दिल्ली स्थित शोध संस्थान है। यह एक पंजीकृत पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट है। केंद्र द्वारा दिल्ली, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और झारखंड में अध्ययन केंद्र चलाए जा रहे हैं। केंद्र ने गत छह वर्षों में पचास से अधिक व्याख्यानों, गोष्ठियों और कार्यशालाओं का आयोजन किया है। कोरोनाकाल के विकट अवसर पर केंद्र ने विभिन्न विषयों पर प्रथम लॉकडाउन से लेकर आज तक सौ से अधिक वेबिनारों का आयोजन किया है। केंद्र द्वारा सभ्यता संवाद नामक एक त्रैमासिक शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। साथ ही केंद्र ने आठ पुस्तकें भी प्रकाशित की हैं तथा कई अन्य पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं।

परिणाम

धन्यवाद